परिचर्चा संचालन में समूह सदस्यों को सम्हालने के संकेत बिन्दु

1. **झगडालू व्यक्ति** (‘Quarrelsome’ Types)

ऐसे व्यक्तियों से उत्तेजित न होवें व उनसे झगडा न करे। वह क्यों बहस कर रहें है? परिचर्चा आगे बढाने के लिये दूसरे व्यक्तियों को आगे लावे। अपने आप से यह पूछे कि क्वारेलसम प्रकार के व्यक्तियों की अच्छाईयों का सदुपयोग कैसे किया जा सकता हैं।

2. **सकारात्मक प्रकार के व्यक्ति** (‘Positive’ Types)

ऐसे व्यक्ति नेता के लिये बडे मददगार होते है। ऐसे व्यक्तियों का बार–बार उपयोग करे। गलत समय पर बडे काम के हो सकते हैं। समूह के लिये सारांश देने के काम आ सकते है।

3. **सर्वज्ञ व्यक्ति** (‘Know-All’ Types)

योगदानों में टिप्पणी देने के लिये दूसरों को लावें। समूह को ऐसे व्यक्तियों के योगदानों पर कार्य करने दों।

4. **अति बातूनी व्यक्ति** (‘Over-Talkative’ Types)

ऐसे व्यक्तियों को तरीके से सम्हालें। उनके बोलने क समय की सीमा बॉधे। यदि ज्यादा बोले तो उन्हे मैत्रीपूर्ण तरीके से चर्चा बिन्दु पर ले आवें। चर्चित बिन्दु और चर्चा करने के लिये दूसरे व्यक्तियों को मौका देवें, उन्हें धीमा करे परन्तु उन्हें इतना न दबावें। वे कभी कभी बडे उपयोगी हो सकते हैं।

5. **अकडू व्यक्ति** (‘Stalker’ Types)

नेता किसी का पक्ष नहीं लेता । यदि सम्भव हो तो प्रश्न पुनः समूह को ही देंवें। यदि न दे सके हो तो सकारण अपने विचार देंवें व पुनः समूह को प्रश्न देंवे।

6. असहयोगी अस्वीकार करने वाले व्यक्ति (Uncooperative 'Rejecting' Types)

ऐसे व्यक्तियों के ज्ञान एवं अनुभव का स्मरण कराते हुऐ उन्हे समूह में शामिल करे। उन्हें यह दिखावें कि उनके पास योगदान देने के लिये बहुत कुछ हैं। उनके योगदान के लिये उन्हें पुरस्कृत करे।

7. मोटी चमडी वाले व्यक्ति ('Thick Skinned' Types)

समूह को चाहिये कि वह ऐसे व्यक्तियों के साथ मिलने का प्रयत्न करे। विचारणीय बिन्दु को सुलझाये नहीं बल्कि आगे बढ जावें।

8. उच्च मस्तक वाले व्यक्ति ('Highbrow' Types)

'हॉ.....लेकिन' तकनीक का प्रयोग करें। उनके योगदानों की पुनरावृत्ति करें व उन्हें समूह में वापस रखें। उनके योगदानों की शुद्धता व उपयोगिता को स्वीकार करें। किसी बिन्दु को समझाने व संक्षिप्त करने के लिये उनका उपयोग करें।

9. चुप रहने वाले व्यक्ति ('Silent' Types)

ऐसे व्यक्तियों से सरल प्रश्न पूछें। उनके योगदानों को पुरस्कृत करते हुऐ उनका विश्वास बढावें। उनके विचारों को मान्यता देवें। वे शर्मीले, उबाउ, असुरक्षित व उदासीन हो सकते है। संतुलन के लिये उनके विचारों का उपयोग करें। यह प्रयास करें कि कब व कैसे उनको चर्चा में लाया जा सकता है।